गुरु-पूर्णिमोत्सव

प्रास्ताविक

अपने कार्य में गुरु पूर्णिमा एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और पवित्र अवसर है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। व्यास महर्षि ने हमारे राष्ट्र जीवन के श्रेष्ठतम गुणों को निर्धारित करते हुए, उनके महान आदर्शों को चित्रित करते हुए, विचार तथा आचारों का समन्वय करते हुए, न केवल भारतवर्ष का अपितु सम्पूर्ण मानव जाति का मार्गदर्शन किया। इसलिए भगवान वेद व्यास जगत् के गुरु है। इसीलिए कहा है- **''व्यासोनारायणं स्वयम्''**। इसी दृष्टि से गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। जिसे हमने श्रद्धापूर्वक मार्गदर्शक या गुरु माना है, उसकी हम इस दिन पूजा करते हैं, उसके सामने अपनी भेंट चढ़ाते हैं, उसे आत्मनिवेदन करते हैं और आगामी वर्ष के लिए आशीर्वाद मांगते हुए, हम अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार यह महान् उत्सव अपने आत्मनिवेदन का पवित्र अवसर है।

व्यक्ति-निष्ठा नहीं, तत्व-निष्ठा

हम सब लोग जानते हैं कि हमारे संघ कार्य में हमने किसी व्यक्तिविशेष को गुरु नहीं माना है। शास्त्रों में गुरु की बड़ी महत्ता कही गई है। गुरु को ईश्वर से भी श्रेष्ठ माना गया है। हमारे ऋषियों ने गुरु के गुण, विस्तार के साथ बखाने हैं अब इतने गुण किसी एक व्यक्ति में पाना कठिन है। किसी व्यक्ति में हम कुछ श्रेष्ठ बातें देख लेते हैं, तो हम उसका आदर करने लगते हैं। परन्तु थोड़े ही दिनों में जब उसके दोष ध्यान में आ जाते हैं तब हमारे मन में अनादर उत्पन्न होता है। कदाचित हम उसका तिरस्कार भी करने लगते है। यह सब घोर अनुचित है। क्योंकि गुरु का त्याग अपने यहाँ बड़ा पाप माना गया हैं परन्तु यह सब हो सकता है, क्योंकि मनुष्यमात्र स्खलनशील है। गायत्री मंत्र के निर्माता विश्वामित्र ऋषि बड़े उग्र तपस्वी और महान् दृष्टा थे। परन्तु उनका भी तो आखिर पतन हुआ। अतः किसी भी मनुष्य को ऐसा

अहंकार नहीं करना चाहिए, कि मैं निर्दोष हूँ और परिपूर्ण हूँ।

मनुष्य-जीवन की कली खिल कर बड़ा सुन्दर और सुगंधी पुष्प विकसित हो जाता हैं परन्तु पता नहीं कैसे और कहाँ से उसमें कीड़ा लग जाता है अतः जब तक जीवन पूर्ण नहीं हो जाता तब तक उसका मूल्यांकन नहीं किया जाता।

इसलिए् संघ कार्य में उचित समझा गया कि हम भावना, चिन्ह, लक्षण या प्रतीक को गुरु मानें। हमने संघ कार्य के द्वारा सम्पूर्ण राष्ट्र के पुनर्निर्माण का संकल्प किया हैं समाज के सब व्यक्तियों के गुणों तथा शक्तियों को हमें एकत्र करना है। इस ध्येय की सतत् प्रेरणा देने वाले गुरु की हमें आवश्यकता थी।

तेज, ज्ञान एवं त्याग का प्रतीक

हमारे समाज की सांस्कृतिक जीवन-धारा में यज्ञ का बड़ा महत्त्व रहा है। 'यज्ञ' शब्द के अनेक अर्थ हैं। व्यक्तिगत जीवन को समर्पित करते हुए समष्टि-जीवन को परिपुष्टि करने के प्रयास को ही यज्ञ कहा गया है सद्गुण रूप अग्नि में अयोग्य, अनिष्ट, अहितकर बातों का होम करना ही यज्ञ है। श्रद्धामय, त्यागमय, सेवामय तपस्यामय जीवन व्यतीत करना ही यज्ञ हैं यज्ञ की अधिष्ठात्री देवता अग्नि है। अग्नि का प्रतीक है ज्वाला और ज्वालाओं का प्रतिरूप है — हमारा परम पवित्र भगवाध्वज।

हम श्रद्धा के उपासक हैं, अंध विश्वास के नहीं। हम ज्ञान के उपासक हैं, अज्ञान के नहीं। जीवन के हर क्षेत्र में बिल्कुल विशुद्ध-ज्ञान की प्रतिष्ठापना करना ही हमारी संस्कृति की विशेषता रही हैं। अज्ञान के नाश के लिये ही हमारे ऋषि-मुनियों ने उग्र तपश्चर्या की है। अज्ञान का प्रतीक हैं अंधकार, और ज्ञान का प्रतीक है सूर्य। पुराणों में कहा गया है कि सूर्यनारायण रथ में बैठकर आते हैं। उनके रथ में सात घोड़े लगे हैं और उनके आगमन के बहुत पहले उनके रथ की सुनहरी गैरिक ध्वजा फड़कती हुई दिखाई देती है। इसी ध्वज को हमने हमारे समाज का परम आदरणीय प्रतीक माना है। वह भगवान का ध्वज है। इसीलिये उसे हम भगवद्-ध्वज कहते हैं। उसी से आगे चलकर शब्द बना है "**भगवाध्वज**" वही हमारा गुरु है।

हमारे यहाँ समाज की सुव्यवस्था के लिए चार आश्रम आवश्यक माने गये हैं। पहले आश्रम में विद्या प्राप्त करना, दूसरे में सामाजिक कर्तव्यों को निभाना, तीसरे में समाज-सेवा करना और चौथे में संन्यास लेकर मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करना। यह

चतुर्थ आश्रम सर्वश्रेष्ठ है। उसमें सर्वसंग परित्याग आवश्यक है। उसमें शुद्ध, पवित्र एवं व्रतस्थ जीवन बिताना पड़ता है। संन्यासी यह ध्यान में रखें कि मैं रात-दिन त्यागरूप अग्नि की ज्वालाओं में खड़ा हूँ। कदाचित इसीलिये हमारे यहाँ के संन्यासी भगवेवस्त्र धारण करते हैं।

इस प्रकार वंदनीय संन्यास आश्रम ने जिसे मान्यता दी है, सूर्य भगवान का जो आगमन चिन्ह है, अग्निशिखाओं की जो प्रतिकृति है, ऐसा हमारा भगवाध्वज, हमारा प्रेरणा स्थान है। उसी के द्वारा हमारे राष्ट्र की आत्मा प्रकट होती है। हमारे देश का इतिहास इसी तथ्य को सिद्ध करता है। इन्हीं सब कारणों से संघ ने इस परम पवित्र तेजोमय, भगवाध्वज को गुरु स्थान पर रखा है, किसी व्यक्ति को नहीं।